ॐ

सदानीरा

विश्व कविता और अन्य कलाओं की पत्रिका

ग्रीष्म 2019

समकालीन मराठी स्त्री कविता

अंक-22। वर्ष-7

अप्रैल 2019-जून 2019

ISSN 2321-1474

प्रधान संपादक
आग्नेय
संपादक
अविनाश मिश्र

आवरण और भीतरी तस्वीरें : मीनाक्षी जे
रचनाकारों की तस्वीरें गूगल से

sadaneera.com /Sadaneera

प्रधान कार्यालय :
बी-207, चिनार वुडलैंड,
कोलार रोड, भोपाल-462016
मध्य प्रदेश
फ़ोन : 0755-2424126, 9303139295
agneya@sadaneera.com

संपादकीय संपर्क :
171, गिरधर एंक्लेव,
साहिबाबाद, ग़ाज़ियाबाद-201005
उत्तर प्रदेश
मो. : 9818791434
editor@sadaneera.com

रचनाएँ भेजने के लिए :
submit@sadaneera.com

सहयोग-सदस्यता

एक अंक के लिए : 100 रुपए, 5 डॉलर
संस्थाओं के लिए : 700 रुपए
वार्षिक सदस्यता : 500 रुपए
आजीवन सदस्यता : 10,000 रुपए

'सदानीरा' डाक से मँगाने के लिए सदानीरा के नाम संपादकीय पते पर चेक/ड्राफ्ट भेजें या देना बैंक (अरेरा कॉलोनी, भोपाल, IFSC : BKDN0811184) के करंट अकाउंट नंबर : 118411023949 में राशि जमा करके हमें ईमेल या फ़ोन पर सूचित कर दें।
© सर्वाधिकार सुरक्षित। इस पत्रिका का कोई भी हिस्सा किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम, जिसमें सूचना संग्रहण और सूचना संसाधन की विधियाँ सम्मिलित हैं, द्वारा प्रकाशक अथवा संपादकों की पूर्वानुमति के बिना पुनरुत्पादित नहीं किया जा सकता सिवाय एक समीक्षक के जो समीक्षा में संक्षिप्त अंशों को उद्धृत कर सकता है। प्रकाशित कृतियों का कॉपीराइट लेखकों / अनुवादकों / कलाकारों का है। भेजी गई रचनाओं पर अगर सात दिन के भीतर कोई उत्तर नहीं मिलता, तब रचनाकार उन्हें अन्यत्र भेजने के लिए स्वतंत्र हैं। मुफ़्त अंक और नमूना प्रति भेजने की सुविधा नहीं है, कृपया इस संदर्भ में कोई फ़ोन, ई-मेल या पत्र-व्यवहार न करें। 'सदानीरा' की सदस्यताएँ केवल प्रिंट इश्यू के लिए हैं। प्रिंट में अनुपलब्ध कुछ अंक डिजिटल फॉर्म में sadaneera.com के **पूर्व अंक** सेक्शन में हैं और वहाँ नि:शुल्क पढ़े और सहेजे जा सकते हैं।

क्रम

ग्रीष्म 2019

समकालीन मराठी स्त्री कविता

शुरुआत

आग्नेय 6

प्रस्तावना

सविता सिंह 9

अनुवादकीय

सुनीता डागा 20

समकालीन मराठी स्त्री कविता

अनुवाद और प्रस्तुति : सुनीता डागा 23

कविता महाजन 24

रजनी परुलेकर 29

प्रभा गणोरकर 34

आसावरी काकडे 38

अनुराधा पाटिल 44

सिसिलिया कारव्हालो 52

मल्लिका अमर शेख़ 57

अंजली कुलकर्णी 62

नीरजा 71

सुजाता महाजन 78

प्रज्ञा दया पवार 84

शरयु असोलकर 95

आश्लेषा महाजन 98

अनुजा जोशी 104

सारिका उबाले 109

कल्पना दुधाल 121

सुचिता खल्लाल 129

योगिनी सातारकर पांडे 135

तस्वीरें

मीनाक्षी जे 142

सौ शब्द

अविनाश मिश्र 156

स्वप्न का सच

आग्नेय

कवि सपनों में जीता है, इसलिए थोड़ी देर के लिए मुझे भी अनुमति दें कि मैं भी सपनों में साँस ले सकूँ और जी सकूँ जब तक इस शुरुआत का अंत नहीं हो जाता। दरअसल, कई बार मुझे लगता है—अपनी जाग्रत अवस्था में, अपनी निद्रा में, अपने स्वप्न में—मैं एक मरुस्थल की यात्रा पर चल पड़ा हूँ। वह मरुस्थल सहारा की तरह अनंत है। मैं इस यात्रा में अपने साथ ऐसा कुछ भी नहीं ले जा रहा हूँ, जो मुझे उस मरुस्थल को पार करने में मदद करे। क्योंकि मैं जानता हूँ : मेरी यह यात्रा इतनी लंबी है कि सब कुछ पहले ही ख़त्म हो चुका होगा—यात्रांत होने से पहले ही। मेरे चारों ओर रेत के ढूह, रेत के टीले, रेत के बवंडर हैं। अचानक मुझे किसी सरिता की कलकल सुनाई देती है, जैसे वह कहीं क़रीब ही बह रही है। इस कलकल को सुनकर मेरे पैरों की गति तेज़ हो जाती है, और मैं एक जगह ठिठक जाता हूँ और देखता हूँ कि मरुस्थल के बीच एक नदी कलकल करती हुई बहती जा रही है।

मरुस्थल के बीच कलकल करती हुई सदानीरा—यह मेरा स्वप्न है जिसे मैंने अपने जीवन के सूर्यास्त में देखना शुरू किया। कई बार मुझे एहसास होता है कि यह स्वप्न नहीं है, यह मृग-मरीचिका है और मुझे अपनी सेनिटी (sanity) को बचाए रखना है। जैसा कि मैंने पहले ही लिखा : कवि सपनों में जीता है, मैं भी सपनों के पार—सपनों के उस पार जो यथार्थ होता है—जो सच होता है उसको देखना चाहता हूँ। आज मैं जिस सदानीरा के बारे में लिखने जा रहा हूँ, वह कोई स्वप्न नहीं है, कोई मृग-मरीचिका नहीं है। वह एक स्वप्न का सच हो जाना है। वह सदानीरा का होना है।

जब 'सदानीरा' का पहला अंक प्रकाशित हुआ, उस समय मैं अपनी आयु के पचहत्तर वर्ष पार कर चुका था। यह उम्र का वह पड़ाव होता है, जब लोग स्वप्न देखना बंद